श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का ह्न

चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 27 मई को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का चतुर्थ अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री डॉ. जीवनलालजी जैन सागर, श्रीमंत सेठ सुरेशजी जैन सागर एवं श्री संतोषजी घड़ीवाले उपस्थित थे। विद्वत्वर्ग में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर आदि मंचासीन थे।

परिषद के महामंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने स्नातक परिषद् की स्थापना और कार्य की जानकारी दी एवं आगामी गतिविधियों की जानकारी देते हुए जुलाई माह में जयपुर में लगने वाले शिक्षण शिविर में क्रमबद्धपर्याय पर गोष्ठी के आयोजन की घोषणा की।

स्नातक परिषद के मार्गदर्शक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने स्नातक परिषद को समाज का भविष्य बताते हुए कहा कि यह परिषद समस्त शास्त्री विद्वानों का संगठन है। इसके द्वारा ही समाज को धर्म की दशा व दिशा प्राप्त होगी।

इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों ने स्वयं का एवं स्वयं के द्वारा किये जा रहे तत्त्वप्रचार के कार्यों का परिचय देते हुये परिषद की गतिविधियों को आगे बढाने के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। इसके पश्चात् अध्यक्ष महोदय ने भी अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए डॉ. भारिल्ल के मार्गदर्शन को संस्था की नींव का पत्थर बताया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर ने एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया।

हार्दिक आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में लगने वाला आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 22 जुलाई से 31 जुलाई, 2012 तक आयोजित होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कृपया अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें; ताकि आपके आवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से हो सके।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2538) 348 अंक : 12

आकुल रहित होय...

आकुल रहित होय इमि निशिदिन, कीजै तत्त्वविचारा हो।
को मैं कहा रूप है मेरा, पर है कौन प्रकारा हो।।
आकुल रहित होय... ।।1।।

को भवकारण बन्ध कहा को, आस्रव रोकनहारा हो।
खिपत कर्म बन्धन काहे सों, थानक कौन हमारा हो।।
आकुल रहित होय... ।।2।।

इमि अभ्यास किए पावत है, परमानन्द अपारा हो।
'भागचन्द' यह सार जान करि, कीजै बारम्बारा हो।।
आकुल रहित होय... ।।3।।

- कविवर पण्डित भागचंदजी

छहढाला प्रवचन

अन्तरात्मा एवं परमात्मा

उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के अन्तर-आतम ज्ञानी।
द्विविध संगबिन शुध उपयोगी मुनि उत्तम निज ध्यानी।।४।।
मध्यम अंतर-आतम हैं जे देशव्रती अनगारी।
जघन कहे अविरत-समदृष्टि, तीनों शिवमगचारी।।
सकल निकल परमातम द्वैविध, तिनमें घाति निवारी।
श्री अरिहंत सकल परमातम, लोकालोक निहारी।।५।।
ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्ममल वर्जित सिद्ध महन्ता।
ते हैं निकल अमल परमातम, भोगैं शर्म अनंता।।
बहिरातमता हेय जानि तजि, अंतर आतम हूजै।
परमातम को ध्याय निरंतर जो नित आनंद पूजै।।६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

अहा ! जिनको आत्मा का संपूर्ण ज्ञान है, संपूर्ण सुख है और राग का संपूर्ण अभाव है - ऐसी उत्कृष्टदशा वाले सर्वज्ञ भगवान हैं, उनका स्वीकार सम्यग्दृष्टि ही करते हैं। बाह्यदृष्टि वाले जीव को (रागदृष्टि वाले जीव को) परमात्मा की पहचान नहीं होती। सर्वज्ञ का स्वीकार तो अपूर्व तत्त्वज्ञान है, वह धर्म का मूल है। सर्वज्ञता कहो या आत्मा का ज्ञानस्वभाव कहो, उसकी पहचान बिना धर्म का प्रारंभ नहीं होता।

सात तत्त्व में से एक जीव तत्त्व की अच्छी तरह पहचान करने से उसकी पर्याय के सभी प्रकार भी समझ में आ जाते हैं। 'सर्वज्ञ' अर्थात् एक साथ सभी को अतीन्द्रियज्ञान से प्रत्यक्ष जानने वाले, तो भी जिनको राग-द्वेष नहीं, कोई संकल्प-विकल्प नहीं, जानने में थकान नहीं, निराकुल आनंद ही है। अहा ! ऐसा परमात्मपद...वह आत्मा की ही एक दशा है।

प्रश्न : शरीर रहते हुए भी सर्वज्ञपद हो सकता है क्या ?

उत्तर : हाँ, शरीर शरीर में है, भगवान को उसका कुछ भी ममत्व नहीं है। जैसे शरीर का संयोग होते हुए भी शरीर से भिन्न आत्मा का अनुभव होता है, वैसे सर्वज्ञता भी हो सकती है। जगत में ऐसे सर्वज्ञपरमात्मा हैं और मेरे आत्मा में भी ऐसा सामर्थ्य है - ऐसा सम्यग्दृष्टि अच्छी तरह (स्वानुभवपूर्वक) जानते हैं। सर्वज्ञ के अस्तित्व का जिसको विश्वास नहीं, उसको आत्मा के ज्ञानस्वभाव का ही विश्वास नहीं है।

निश्चय सम्यग्दर्शन में धर्मी जीव निर्विकल्परूप से शुद्ध आत्मतत्त्व में ही 'अहं' (मैं-ऐसी प्रतीति) करता है और उस सम्यग्दर्शन के साथ की ज्ञानपर्याय में इतनी ताकत है कि सर्वज्ञपरमात्मा को भी वह अपने निर्णय में ले लेती है। अंतर में अपना शुद्धात्मा तो निर्णय में लिया है और उसकी उत्कृष्ट पर्यायरूप से परिणत परमात्मा कैसा है - यह भी निर्णय में आ गया है। शुद्ध द्रव्य की जो श्रद्धा करे, उसके सामर्थ्य की तो क्या बात ? परन्तु उसके साथ का ज्ञान, जो कि राग से भिन्न हुआ है, उस ज्ञान के व्यवहार में भी इतनी ताकत है कि परमात्मा को भी वह जान लेता है, बहिरात्मा, अंतरात्मा व परमात्मा जीवों को जान लेता है। द्रव्यरूप, शुद्ध ज्ञानमय आत्मा और उसकी पर्यायरूप त्रिविध आत्मा, उसका स्वरूप जैसा है, वैसा सम्यग्दृष्टि जानता है। समस्त लोकालोक की तीनों काल की पर्याय सहित एक समय में ज्ञान का ज्ञेय बनावे - ऐसा महान अचिंत्य सामर्थ्य केवलज्ञान में है; यहाँ पूरा ज्ञान है तो सामने समस्त ज्ञेय एक साथ निमित्त हैं। बस, ज्ञान में सर्व ज्ञेय मानो स्थिर हो गये, ज्ञान ज्ञान में स्थिर रह गया, कहीं कर्तृत्वबुद्धि या आगे-पीछे कर देने की वृत्ति न रही। ऐसी दशा वाले सर्वज्ञ को सम्यग्दृष्टि जानते हैं - इतनी तो उसकी व्यवहार श्रद्धा में ताकत है, परमार्थश्रद्धा निर्विकल्प है, उसकी ताकत का तो क्या कहना? जब ऐसी श्रद्धा करे, तब ही जीव के मोक्ष का मार्ग खुलता है।

देखो, सच्ची श्रद्धा करने के लिए जीवतत्त्व का यह वर्णन चल रहा है। निश्चय से ज्ञायकतत्त्व एक अखंड शुद्ध है, वह जीव है, व्यवहार में उसके तीन प्रकार हैं। शास्त्र-स्वाध्याय में ऐसे तत्त्वों का मनन करते-करते, ज्ञान को एकाग्र

करते-करते ज्ञान में विशेष स्पष्टता होती जाती है, अत: वीतरागमार्ग में कहे हुए तत्त्वों का बारम्बार मनन करना चाहिए।

सिद्ध परमात्मा जिनको न शरीर है, न मन है, न इन्द्रियाँ हैं, न राग है, उन सबके न होने पर भी केवलज्ञान है; ऐसे सिद्ध परमात्मा की पहचान करने से ऐसा निर्णय होता है कि शरीर-मन-इन्द्रियाँ या राग के आधीन आत्मा का ज्ञान नहीं है। सिद्ध परमात्मा ज्ञानशरीरी है; ज्ञान ही आत्मा का अंग है, जो आत्मा से कभी भिन्न नहीं होता। इसलिए कहा है कि -

ज्ञानशरीरी त्रिविध-कर्ममलवर्जित सिद्धमहन्ता।
ते हैं निकल-अमल-परमातम भोगें शर्म अनन्ता।।

ज्ञानशरीरी चैतन्यमय सिद्ध भगवंत सदाकाल अनंत आत्मिक सुख को भोगते हैं। ऐसे सिद्ध को लक्ष में लेकर साधक कहते हैं कि -

'चेतनरूप अनूप अमूरत, सिद्धसमान सदा पद मेरो।'

ऐसे अपने आत्मतत्त्व की प्रतीति सहित परमात्मा को जानते हैं। जो अकेले परलक्ष से जाने, वह सच्चा ज्ञान नहीं।

इस जगत में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध भगवंत हैं; वे आत्मा के अनन्त आनन्द को भोगते हैं, अखिल विश्व को जानते हैं; उन्हें औदारिकादि पुद्गल शरीर नहीं है, अत: वे देहातीत अशरीरी हैं, परन्तु अपने ज्ञानादि अनन्तगुणों में तन्मय होने से वे ज्ञानशरीरी हैं। ज्ञान ही आत्मा का जीवन है; आत्मा शरीर के संयोग के बिना, आयुकर्म के बिना, अपने ज्ञान से ही शाश्वत जीने वाला है। ऐसा जीवन जीने वाले सिद्ध भगवंत महन्त हैं, भव का अंत करके वे महंत हुए हैं और अनन्त सुख को भोगते हैं। महान आत्मा के जानने वाले सम्यग्दृष्टि जीवों को भी महंत-महात्मा कहा जाता है, परन्तु ये सिद्ध भगवान तो जगत में सबसे बड़े महंत हैं।

इसप्रकार श्लोक ४-५-६ में त्रिविध आत्मा का स्वरूप दिखाकर कहते हैं कि -

बहिरातमता हेय जानि तजि अंतर आतम हूजे।
परमातम को ध्याय निरंतर जो नित आनंद पूजे।।

आत्मा के तीन प्रकार को जानकर बहिरात्मपने का त्याग करना। सम्यग्दृष्टि ने तो बहिरात्मपने को छोड़ ही दिया है, परन्तु अन्य जो जिज्ञासु जीव हैं, वे भी इस उपदेश के द्वारा आत्मा का स्वरूप पहचानकर बहिरात्मपने को छोड़कर और अंतरात्मा होकर परमात्मस्वरूप का ध्यान करो, जो सदा आनन्दकारी है।

जो देह को आत्मा माने, इन्द्रियविषयों में सुख माने, पुण्य-राग को धर्म माने या बाह्य वस्तु से अपना कुछ हित-अहित होने का मानें, वे सब बहिरात्मा हैं - ऐसा पहचान कर उसप्रकार की विपरीत मान्यता को छोड़ना एवं ऐसी विपरीत मान्यता के पोषक जीवों का संग छोड़ना। देह से और परभावों से भिन्न, शुद्ध ज्ञानमय स्वतत्त्व को पहचान कर स्वयं अंतरात्मा होना एवं ऐसे अन्य साधर्मी-अंतरात्मा को आदरणीय जानना। अंतरात्मा क्या करते हैं ? कि परमात्मा को ध्याते हैं। सम्यग्दृष्टि ने अंतर में अपने शुद्धात्मा को निश्चय ध्येय बनाया है और व्यवहार में अरिहन्त तथा सिद्धपरमात्मा को ध्याते हैं, आदर करते हैं। विकल्प को या राग को वे नहीं ध्याते, परन्तु सर्वज्ञतारूप व पूर्ण आनन्दरूप ऐसे परमात्मा को ही ध्याते हैं। निश्चय में अपना परम स्वभाव ध्येय है और व्यवहार में अरिहन्त-सिद्धपरमात्मा ध्येय हैं। वे अनन्त आनन्द को प्राप्त परमात्मा के ध्यान के द्वारा अपने स्वभाव में एकाग्रता का उग्र प्रयत्न करते हैं और विकल्प तोड़कर अनन्त आनन्द का अनुभव करते हैं।

इसप्रकार शुद्ध आत्मा के ध्यान से अनन्त आनन्द (काल से भी अनन्त और भाव से भी अनन्त) प्राप्त होता है। शुद्ध आत्मा के ध्यान के बिना अन्यत्र जगत् में कहीं भी आनन्द नहीं है। परमात्मा का सच्चा ध्यान अपने ज्ञानस्वभाव में एकाग्रता से ही होता है, यह बात समयसार की ३१वीं गाथा में दिखायी है। इसप्रकार शुद्ध जीवतत्त्व को पहिचान करके, उसकी श्रद्धा से अन्तरात्मा होना और पीछे उसी के ध्यान से परमात्मा होना - यह जीवतत्त्व की पहचान का फल है।

इसप्रकार सात तत्त्वों में से जीवतत्त्व की बात की; अब अगले छन्द में अजीव के प्रकार कहते हैं। ●●●

नियमसार प्रवचन -

आत्मा कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 43वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णिद्दंडो णिद्दंद्दो णिम्मओ णिक्कलो णिरालंबो।
णीरागो णिद्दोसो णिम्मूढो णिब्भयो अप्पा।।४३।।
निर्दण्ड है निर्द्वन्द है यह निरालम्बी आतमा।
निर्देह है निर्मूढ है निर्भयी निर्मम आतमा।।४३।।

यह आत्मा निर्दंड, निर्द्वन्द, निर्मम, नि:शरीर, निरालम्ब, निराग, निर्दोष, निर्मूढ और निर्भय है।

(गतांक से आगे ...)

(७) ज्ञानशरीरवाला पवित्र आत्मा राग-द्वेषरूपी कचरे को धो डालता है, अत: आत्मा निर्दोष है।

'निश्चय से समस्त पापमल कलंकरूपी कादव को धो डालने में समर्थ, सहज परम, वीतराग सुख-समुद्र में मग्न (लीन-डूबा हुआ) प्रगट सहजावस्थारूप जो सहज ज्ञानशरीर उससे पवित्र होने के कारण आत्मा निर्दोष है।'

कैसा है आत्मा? त्रिकाल निर्दोष है। यहाँ पाप का अर्थ विकार समझना, दया, दान, व्रत, काम, क्रोधादि पुण्य-पाप के भाव विकार हैं - पाप हैं ह्न कलंक हैं। ऐसे समस्त पापमल कलंकरूपी कीचड़ को धोने में आत्मा समर्थ है। आत्मा सहज परमवीतराग सुख-समुद्र है, उसमें स्वाभाविक ज्ञान अवस्था डूबी हुई है। यहाँ त्रिकाली स्वभाव शुद्ध तथा उसकी कारणपर्याय भी शुद्ध - इसप्रकार दो होकर सम्पूर्णद्रव्य, वह द्रव्यदृष्टि का विषय है। ऐसे त्रिकाल शुद्धस्वभाव में डूबा हुआ कारणशुद्धपर्यायरूप जो सहज ज्ञानशरीर है, उससे आत्मा पवित्र है। त्रिकाली ज्ञानशरीरस्वभाव में वीतरागी अवस्था डूबी हुई है, उस सहित सम्पूर्ण आत्मा रागद्वेषरूपी संसार के मैल को धो डालने में समर्थ है। दया-दानादि की वृत्ति उद्भूत

होती है वह कादव है, उसके समक्ष ज्ञानमात्र अर्थात् ज्ञानशरीर है कि जो उस कादव को धो डालता है। अर्थात् ऐसे ज्ञानस्वभाव के ओर की अन्तर्दृष्टि करने पर पापमल धुल जाता है।

आत्मा का स्वरूप निर्दोष है। औदारिक शरीर तो माता-पिता के निमित्त से मिला है, परन्तु आत्मा का ज्ञानशरीर किसी के निमित्त से उत्पन्न नहीं हुआ है, अतः सहज कहा है। वर्तमान शुद्धपर्यायसहित त्रिकालीद्रव्य वह सम्यग्दर्शन का विषय है। पुण्यादि के व्यवहार से शुद्धात्मा का स्वभाव उपलब्ध हो सकता नहीं, तथा व्यवहार से व्यवहार का ज्ञान भी होता नहीं; किन्तु आत्मा त्रिकाली ज्ञानस्वरूप है - ऐसा ज्ञान होने पर विकल्प और निमित्त का ज्ञान हो जाता है। इसप्रकार आत्मा निर्दोषस्वरूप है जो समस्त पाप को धोने में समर्थ है।

(८) (अ) ज्ञानादि अनेक धर्मों के आधारभूत निजपरमात्मतत्त्व को आत्मा जानता है, अतः आत्मा निर्मूढ़ है।

'सहज निश्चय से सहजज्ञान, सहजदर्शन, सहजचारित्र, सहज परमवीतराग सुख आदि अनेक परम धर्मों के आधारभूत निजपरमात्मतत्त्व को जानने में समर्थ होने से आत्मा निर्मूढ़ है (मूढ़तारहित है)।'

आत्मा में अनेक धर्म हैं - उनमें सहजज्ञान, सहजदर्शन, सहजचारित्र, सहजपरमवीतराग सुख आदि हैं। वीर्य आदि गुण उसमें आ जाते हैं। निश्चयनय से उन अनन्त धर्मों का आधार निजपरमतत्त्व है। धर्म तो अनेक हैं किन्तु धर्मी एक है। यहाँ आत्मा का अर्थ है त्रिकाली शुद्धभाव। त्रिकाली शुद्धभाव अनन्त गुणों के अभेद निजपरमतत्त्व को जानने में समर्थ है इसलिये आत्मा मूढ़तारहित है। यहाँ वर्तमान पर्याय की बात नहीं है, त्रिकाल चैतन्यस्वभाव की बात है। त्रिकाल स्वयं को जानने के स्वभाववाला है। यहाँ अकेले स्व को जानने में समर्थ है, ऐसा कहकर अकेले स्व की बात लेनी है। ध्रुवपर्याय सहित आत्मा को शुद्धभाव जानता है - वह निश्चय है, अतः आत्मा मूढ़तारहित है। और जो पर्याय ऐसे आत्मा को स्वीकार करे वह पर्याय व्यवहारनय में जायेगी - वह अब कहेंगे।

(ब) केवलज्ञान तीन लोक के पदार्थों के द्रव्य-गुण-पर्याय को एकसमय में जानता है, ऐसे निर्मल केवलज्ञानरूप से अवस्थित होने से आत्मा निर्मूढ़ है।

'अथवा सादि-अनन्त, अमूर्त्त, अतीन्द्रियस्वभाववाला, शुद्धसद्भूत व्यवहारनय से तीनकाल और तीनलोक के स्थावर-जंगमस्वरूप समस्त द्रव्य-गुणपर्यायों को एकसमय में जानने में समर्थ सकल-विमल (सर्वथा निर्मल) केवलज्ञानरूप से अवस्थित होने से आत्मा निर्मूढ़ है।'

निर्मूढ़ता का दूसरा बोल है। उसमें केवलज्ञान की बात करते हैं। आत्मा का भान साधकदशा में है, परन्तु उस अधूरी पर्याय की बात न करके पूर्ण केवलज्ञान पर्याय की बात ली है। शुद्धकारणपरमात्मा के आश्रय से प्रगट होनेवाली कार्यरूप केवलज्ञान पर्याय कैसी है ? वह नई प्रगट हुई है और अनन्तकाल तक टिकेगी, इसलिये सादि-अनन्त है; स्पर्श, रस, गंध, वर्ण रहित है, अतः अमूर्त्त है; इन्द्रियों के निमित्त बिना ही आत्मा से सीधी प्रगट हुई है, इसलिये अतीन्द्रिय स्वभाववाली है - ऐसा कहा।

केवलज्ञान समस्त पदार्थों को शुद्धसद्भूत व्यवहार से जानता है। केवलज्ञान में किंचित् भी अशुद्धि नहीं, अतः शुद्ध अपनी पर्याय है; अतः सद्भूत तथा आत्मा और केवलज्ञान की पर्याय - ऐसा भेद पड़ता है, अतः व्यवहार, इसप्रकार शुद्धसद्भूत व्यवहारनय कहा है। वह केवलज्ञान तीनकाल और तीनलोक के जड़ तथा चेतन एवं स्थिर अथवा गमनशील - ऐसे सभी पदार्थों को जानता है। समस्त पदार्थों के द्रव्य-गुण-पर्यायों को एक-समय में जानने में समर्थ वह केवलज्ञान सर्वथा निर्मल है। उसीप्रकार प्रगट होने के पश्चात् कभी नाश नहीं होता इसलिये अवस्थित है। इस भाँति केवलज्ञान सादि-अनन्तकाल टिका रहता है और सर्व को जानता है, अतः आत्मा निर्मूढ़ है। केवलज्ञान स्व और पर दोनों को जानता है।

प्रथम निर्मूढ़ के बोल में निश्चय से सहज ज्ञानस्वरूप सहित द्रव्य ऐसा जो निज परमतत्त्व उसको आत्मा जानता है, वह निश्चयनय का विषय है और वही सम्यग्दर्शन का ध्येय है, वही आदरणीय है। यहाँ निर्मूढ़ के दूसरे बोल में स्व-पर ज्ञायक जो केवलज्ञान, वह व्यवहारनय का विषय है और आदर करने योग्य नहीं है। क्योंकि निम्न दशा में केवलज्ञान पर्याय तो है नहीं और उसका विचार करने से राग उत्पन्न होता है; अतः वह सम्यग्दर्शन का कारण नहीं, वह तो ज्ञान करने का विषय है। इसप्रकार केवलज्ञान अपेक्षा से भी आत्मा को निर्मूढ़ कहा।

कोई कहे कि ऐसी बात सुनने से माथा फिर जाता है। किन्तु भाई ! तुझे रस नहीं है इसलिये ऐसा प्रतीत होता है। पचास लाख की पूँजीवाले गृहस्थ के यहाँ पचास वर्ष में प्रथम पुत्र जन्म ले तो उसकी माँ उसके गाने गाते समय कोई कमी नहीं रखती; उसीप्रकार पद्मप्रभमलधारिदेव मुनिराज ने शुद्धभाव, परमभाव इत्यादि से आत्मा के गीत गाने में कोई कसर नहीं रखी है, अकेले शुद्धभाव के ही गाने गाये हैं।

(९) त्रिकाली शुद्ध अन्तःतत्त्व में राग-द्वेषरूपी शत्रु प्रवेश नहीं कर सकते, इसलिये आत्मा निर्भय है।

'समस्त पापरूपी शूरवीर शत्रुओं की सेना जिसमें प्रवेश नहीं कर सकती, ऐसे निजशुद्ध अन्तःतत्त्वरूप महादुर्ग में निवास करने से आत्मा निर्भय है - यही आत्मा वास्तव में उपादेय है।'

यहाँ पाप का अर्थ विकार समझना, इसमें शुभ-अशुभ दोनों भाव आ जाते हैं। इन शुभाशुभ भावों के असंख्य भेद हैं, वे सभी आत्मा की शुद्धता को रोकते हैं; अतः शत्रु हैं जहाँ तक आत्मा की निर्मलता शेष है, वहाँ तक विकार का जोर है; परन्तु शुद्ध अन्तःतत्त्वरूपी ऐसा दुर्ग है कि जिसमें विकार की शूरवीर सेना प्रवेश नहीं कर सकती। जगत में राजा महाराजा भी ऐसा सुदृढ़ किला बनाते हैं कि जिसमें शत्रु प्रविष्ट न हो सके, और उसको गोला-बारूद न लग सके; उसीतरह कारणपरमात्मा में अथवा एकरूप शुद्ध स्वभाव में पुण्य-पापरूपी उदयभाव का कभी भी प्रवेश नहीं हो सकता। जैसे दुर्ग में राजा बैठा हो वैसे ही यहाँ चैतन्य भगवान राजा अन्तःतत्त्व में - शुद्धस्वभाव में विराजता है। उसमें संसार की - विकार की सेना प्रवेश नहीं कर सकती।

यहाँ अन्तःतत्त्व का अर्थ अन्तरात्मा मत समझना, क्योंकि वह तो नवीन प्रगटती निर्मल पर्याय है। यहाँ अन्तःतत्त्व अर्थात् अनादि-अनन्त एकरूप रहता हुआ शुद्ध भाववाला कारणपरमात्मा है, जिसके द्रव्य-गुण-पर्याय एकरूप शुद्ध हैं। इसप्रकार अन्तःतत्त्वरूप दुर्ग में बसता होने से आत्मा निर्भय है। यहाँ तो जीव छोटी-मोटी बातों में भी डर जाता है। परन्तु भाई ! निर्भय आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान और एकाग्रता करे तो भय उत्पन्न होगा ही नहीं।

इन नव बोलों द्वारा लक्षित आत्मा का लक्ष करने से धर्मदशा प्रगट होगी।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : शास्त्राभ्यास आदि करने पर भी उससे सम्यग्दर्शन नहीं होता, तो सम्यग्दर्शन के लिए क्या करना ?

उत्तर : यथार्थ में तो एक आत्मा की ही रुचिपूर्वक सबसे पहिले आत्मा को जानना, वही सम्यग्दर्शन का उपाय है। आत्मा का सत्य निर्णय करने वाले को पहिले सात तत्त्वों का सविकल्प निर्णय होता है, शास्त्राभ्यास होता है, शास्त्राभ्यास ठीक है - ऐसा भी विकल्प होता है, लेकिन उससे यथार्थ निर्णय नहीं होता। जहाँ तक विकल्प सहित है, वहाँ तक परसन्मुखता है, परसन्मुखता से सत्य निर्णय नहीं होता। स्वसन्मुख होते ही सत्य निर्विकल्प निर्णय होता है। सविकल्पता द्वारा निर्विकल्प होना कहा है, तो भी सविकल्पता निर्विकल्प होने का सही कारण नहीं है। तब भी सविकल्पता पहिले होती है, इसीकारण सविकल्प द्वारा निर्विकल्प होना कहा जाता है।

प्रश्न : क्या सम्यग्दृष्टि को अशुभभाव के सद्भाव में आयुष्य बँधती है ?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि को चौथे-पाँचवें गुणस्थान में व्यापार-विषयादि का अशुभराग भी होता है; तथापि सम्यग्दर्शन का ऐसा माहात्म्य है कि उसको अशुभभाव के समय आयुष्य नहीं बँधती, शुभभाव में ही बँधती है। सम्यग्दर्शन का ऐसा प्रभाव है कि उसके भव बढते तो हैं ही नहीं; यदि भव होते भी है तो नीचा भव नहीं होता, स्वर्गादि का ऊँचा भव ही होता है।

प्रश्न : जिसके प्रताप से जन्म-मरण टले और मुक्ति प्राप्त हो ऐसा अपूर्व सम्यग्दर्शन पंचमकाल में शीघ्र हो सकता है क्या ?

उत्तर : पंचमकाल में भी क्षणभर में सम्यग्दर्शन हो सकता है। पंचमकाल सम्यग्दर्शनादि प्राप्त करने के लिए प्रतिकूल नहीं है। सम्यग्दर्शन प्रगट करना तो वीरों का काम है, कायरों का नहीं। पंचमकाल में नहीं हो सकता, वर्तमान में नहीं हो सकता - ऐसा मानना कायरता है। बाद में करेंगे, कल करेंगे - इसप्रकार वायदाकरने वालों का यह काम नहीं है। आज ही करेंगे, अभी करेंगे - ऐसे वीरों का यह काम है। आत्मा आनन्दस्वरूप है, उसके समक्ष देखने वालों को पंचमकाल क्या करेगा ?

समाचार दर्शन -

46वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1200 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित ●प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 25 विद्वानों का समाज को लाभ मिला ● बालबोध प्रशिक्षण में 500 एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 122 विद्यार्थी सम्मिलित हुये ● शिविर में लगभग डेढ लाख रुपयों का सत्साहित्य एवं लगभग 1 लाख 5 हजार घण्टों के सी.डी. व डी.वी.डी. प्रवचन घर-घर पहुँचे ।

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर आयोजन समिति, सागर द्वारा आयोजित 46 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनाँक 13 से 30 मई, 2012 तक अनेक उपलब्धियों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन चौधरी धर्मेन्द्र कुमार जैन कोलारस एवं श्री देवेन्द्र कुमार जैन कोलारस ने किया।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमंत सेठ मानकचंद, प्रेमचंद, अशोककुमार जैन एवं समस्त बी.एस. जैन परिवार सागर एवं आमंत्रणकर्ता श्री सेठ गुलाबचन्द मनीषकुमार जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट सागर थे। शिविर में 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया, जिसके आमंत्रणकर्ता इंजी.आनन्दकुमार जैन (खुरईवाले) सागर एवं श्री सुभाषचंद सुरेशचंद वकीलचंद जैन परिवार नांगलोई दिल्ली थे।

प्रात:कालीन प्रवचन – प्रतिदिन प्रात: 6 बजे से आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के ग्रन्थाधिराज समयसार के बंध अधिकार की प्रारंभिक गाथाओं पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचन – प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के 'सात तत्त्वों का स्वरूप' के आधार से हुए द्वितीय प्रवचन के पूर्व प्रतिदिन क्रमश: पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचन्दजी टडा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, इंजी. अनिलजी इन्दौर, पण्डित कपूरचन्दजी भाईजी, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित निर्मलजी सिंघई के विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दोपहर की व्याख्यानमाला में – पण्डित सुनीलजी मामा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित अंकुरजी जबेरा, पण्डित दीपेशजी अमरमऊ, पण्डित अरुणजी बड़ामलहरा, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित अरविन्दजी सुजानगढ, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित गणतंत्रजी आगरा, पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पण्डित राकेशजी लिधौरा, पण्डित विजयजी बोरालकर, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी, पण्डित सोनूजी फिरोजाबाद

एवं पण्डित अनेकान्तजी दलपतपुर के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें – प्रात:काल बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल व पण्डित कोमलचंदजी टडा ने एवं दोपहर में शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित कोमलचंदजी टडा ने ली। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित कोमलचन्दजी टडा एवं पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री कोटा द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित अभयजी बदरवास, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री सागर, पण्डित अशोकजी इन्दौर, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित विजयजी बोरालकर, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा, पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पण्डित अरविन्दजी सुजानगढ, पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित शिखरचंदजी सागर, पण्डित सुनीलजी प्रतापगढ, विदुषी कमलाजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, विदुषी रंजनाजी बंसल अमलाई, विदुषी लता जैन देवलाली, कु.प्रज्ञा जैन देवलाली एवं कु.परिणति पाटील जयपुर आदि विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रौढ़ कक्षायें – प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, दोपहर में नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं सायंकाल गुणस्थान विवेचन की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन जयपुर ने ली।

प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक जी-जागरण पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीन समय कक्षाओं का आयोजन किया गया। इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें 200-250 बच्चे सम्मिलित हुये। प्रत्येक बालक ने बालबोध पाठमाला के तीनों भागों की परीक्षा दी एवं पण्डित आराध्य टडैया के निर्देशन में रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 26 मई को श्रुतपंचमी के अवसर पर प्रात: विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें सभी साधर्मी भाई-बहनों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया। इसके पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के विशेष व्याख्यान का लाभ भी मिला। पालकी को सर्वप्रथम उठाने का सौभाग्य श्री जयकुमारजी जैन सागर व श्री वी.एस. जैन को एवं शास्त्र विराजमान करने का सौभाग्य श्री वैभवजी मोदी दलपतपुर को मिला।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन – दिनांक 29 मई को प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ। इस अवसर पर अध्यक्षता श्री विनोदजी गौरझामर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में इंजी. नेमीचंदजी मंचासीन थे। मुख्य वक्ता के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं अन्य विद्वानों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अभयजी बदरवास, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचंदजी टडा,

पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित राकेशजी लिधौरा, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित सन्मतिजी मोदी, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित धमेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित सौरभजी कोटा, पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद, विदुषी कमला भारिल्ल, विदुषी लताबेन, विदुषी रंजना बंसल अमलाई, विदुषी स्वर्णलता जैन नागपुर, कु. प्रज्ञा जैन देवलाली, कु. परिणति पाटील जयपुर एवं कु. प्रतीति पाटील जयपुर उपस्थित थे।

कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिदिन पाठशाला चलाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री ऋषभजी जैन मौ एवं शुचि जैन सागर ने किया।

दीक्षान्त व समापन समारोह-दि. 30 मई को दीक्षान्त व समापन समारोह संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री ऋषभकुमारजी शाहगढ मंचासीन थे। इसके अतिरिक्त सभी विद्वत्गण एवं आयोजन समिति के समस्त पदाधिकारीगण मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के दीक्षान्त भाषण के उपरान्त शिविर संयोजक श्री प्रमोदजी मोदी ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा-परिणाम प्रस्तुत किया।

समारोह में आयोजन समिति द्वारा ग्रन्थ एवं श्रीफल भेंटकर समस्त शिक्षकों का सम्मान किया गया।

बालबोध प्रशिक्षण के परीक्षा परिणाम के अन्तर्गत प्रथम स्थान कु. सुप्रिया जैन सुपुत्री श्री राकेश जैन गढाकोटा ने (89%), द्वितीय स्थान कु. विभूति जैन सुपुत्री श्री प्रमोद जैन सागर (86.5%) व हिमांशु जैन सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जैन जयपुर ने (86.5%) एवं तृतीय स्थान कु. शुचि जैन सुपुत्री श्री सुधीरकुमार जैन गौरझामर (86%) व कु. अनुभा जैन सुपुत्री श्री उमेश जैन सागर (86%) ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण के परीक्षा-परिणाम के अन्तर्गत प्रथम स्थान सौम्य जैन पुत्र श्री शिखरचन्दजी शास्त्री सागर ने (88%), द्वितीय स्थान श्रीमती प्रियंका जैन धर्मपत्नी श्री गणतंत्र शास्त्री आगरा ने (87.5%) एवं तृतीय स्थान कु. अनुभूति जैन सुपुत्री श्री अशोककुमार जैन नागपुर (86%) व कु. विपाशा जैन सुपुत्री श्री राजकुमार शास्त्री बांसवाड़ा(86%) ने प्राप्त किया।

ज्ञातव्य है कि बालबोध प्रशिक्षण हेतु लगभग 468 छात्रों ने प्रवेश लिया था, जिसमें से 340 छात्रों ने परीक्षा दी। इसमें से 113 छात्रों ने विशेष योग्यता (75% से अधिक अंक), 149 ने प्रथम श्रेणी, 35 ने द्वितीय एवं 3 छात्रों ने तृतीय श्रेणी के साथ परीक्षा उत्तीर्ण की।

प्रवेशिका प्रशिक्षण हेतु 87 छात्रों ने प्रवेश लिया था, जिसमें से 68 छात्रों ने परीक्षा दी। इनमें से 25 छात्र विशेष योग्यता (75% से अधिक अंक), 30 छात्र प्रथम श्रेणी एवं 13 छात्र द्वितीय श्रेणी के साथ उत्तीर्ण हुए।

बालबोध प्रशिक्षण हेतु 468 छात्रों की संख्या अभी तक के प्रशिक्षण शिविरों में आये हुए प्रशिक्षणार्थियों की सर्वाधिक रिकॉर्ड संख्या है।

इस प्रकार इन प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से अभी तक कुल 9311 अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का -

अधिवेशन संपन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 13 से 30 मई तक होने वाले श्री वीतराग-विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण शिविर में शनिवार, दिनांक 26 मई को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अधिवेशन की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि श्री चक्रेशकुमार-राजेशजी जैन अशोकनगर एवं विशिष्ट अतिथि श्री विकासजी मोदी मकरोनिया सागर थे।

इस अवसर पर विद्वानों के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, श्री अरुणजी मोदी, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित रमेशजी मंगल, श्री राजेन्द्रजी बंसल अमलाई; राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों के अन्तर्गत पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, श्री रतनचंदजी जैन कोटा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं शिविर की आयोजन समिति के सदस्यों के अन्तर्गत सेठ गुलाबचंदजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट सागर (कार्याध्यक्ष), श्री आदित्यजी जैन लाल दुकान सागर (महामंत्री), श्री प्रमोदजी जैन, एल.आई.सी. सागर (संयोजक) एवं श्री सुनीलकुमारजी सर्राफ सागर (स्वागताध्यक्ष) आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण किया गया, तत्पश्चात् सभी महानुभावों का स्वागत इंजीनियर सुनीलजी जैन, श्री मनोजजी बुंदेला ने किया। स्वागत भाषण श्री विकासजी मकरोनिया सागर ने किया एवं सागर फैडरेशन की शाखा की गतिविधियों की जानकारी दी। नागपुर शाखा की गतिविधियों की जानकारी पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर ने, खड़ैरी शाखा की जानकारी पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री खड़ैरी ने, राजस्थान प्रांत की जानकारी पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा ने दी। तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का उद्बोधन एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा अध्यक्षीय भाषण हुआ।

इस अवसर पर श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई (राष्ट्रीय महामंत्री-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन) ने इस संगठन की आवश्यकता व उपयोगिता पर प्रकाश डाला एवं गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

हार्दिक बधाई !

श्रीमती शान्तिदेवी व श्री धन्यकुमार जैन जयपुर वाले सूरत के सुपौत्र चि. स्नेहिल की सगाई श्री बाबूलालजी झांझरी इचलकरणजी वालों की सुपुत्री कुमारी प्रीति के साथ दिनांक 30 अप्रैल को संपन्न हुई। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 250-250/- रुपये प्राप्त हुये।

अभूतपूर्व उत्साह के साथ मनाया गया संकल्प दिवस

सागर (म.प्र.) : यहाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 25 मई को सायंकाल तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का 78वाँ जन्मदिवस विगत 3 वर्षों की भाँति इस वर्ष भी **संकल्प दिवस** के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर उपस्थित लगभग 2 हजार से अधिक जनसमूह के बीच 184 शास्त्री विद्वानों ने व अन्य अनेक अभ्यासी विद्वानों ने खड़े होकर डॉ. भारिल्ल द्वारा चलाये जा रहे तत्त्वप्रचार के अभियान में जुटने और आजीवन उसे जीवंत बनाये रखने का संकल्प लिया।

स्नातक परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने संकल्प का वाचन किया और सभी ने सामूहिक रूप से उसे दोहराया।

उल्लेखनीय है कि 4 वर्ष पूर्व डॉ. भारिल्ल के हीरक जयन्ती वर्ष की स्थापना के अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी के सुझाव व उपस्थित जनसमुदाय की अनुमोदना पर ही डॉ. भारिल्ल के जन्मदिन को प्रतिवर्ष संकल्प दिवस के रूप में मनाये जाने का निर्णय लिया गया था। तब से अब तक लगभग 550 विद्वान विधिपूर्वक प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करके इसप्रकार का संकल्प ले चुके हैं। आशा है इसप्रकार का यह संकल्प इस तत्त्वप्रचार के अभियान को नई ऊर्जा और दीर्घ आयु प्रदान करेगा।

इससे पूर्व प्रात:काल सम्पूर्ण उपस्थित समाज ने डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् जन्मदिवस के अवसर पर जिनवाणी के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित जीवन के लिए डॉ. भारिल्ल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

इस अवसर पर डॉ. राजेशजी जैन विदिशा की ओर से डॉ. भारिल्ल की रचना 'क्रमबद्धपर्याय-एक अनुशीलन' की 500 प्रतियाँ नि:शुल्क वितरित की गईं।

विद्वानों द्वारा लिया गया संकल्प -

''हम अपने गुरु डॉ हुकमचन्दजी भारिल्ल के 75वें जन्मदिवस (हीरक जयन्ती) के अवसर पर उनके समक्ष देव-शास्त्र-गुरु की साक्षीपूर्वक भगवान महावीर आदि तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि में उपदिष्ट कुन्दकुन्दादि आचार्यों, टोडरमलजी आदि विद्वानों एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रदर्शित वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का आजीवन संकल्प लेते हैं। हम सदैव तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार हेतु प्रयत्नशील रहेंगे।''

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

पं. कैलाशचंदजी जैन (बुलन्दशहर वाले) के जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में आयोजित -

मंगल समर्पण समारोह सानन्द संपन्न

● आचार्य भगवन्तों, ज्ञानी-धर्मात्माओं एवं गुरुदेवश्री की स्टेच्यू का अनावरण ● नवनिर्मित स्वाध्याय भवन का उद्घाटन ● मंगल समर्पण ग्रन्थ का लोकार्पण ● सम्पूर्ण देश एवं विदेश से सैंकड़ों साधर्मियों का मिलन ● हजारों रूपयों के सत्साहित्य का विक्रय

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम मंगलायतन में दिनांक 9 से 11 जून तक पण्डित कैलाशचंदजी जैन के 100वें वर्ष में प्रवेश करने के अवसर पर 'मंगल समर्पण' समारोह अनेकानेक ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, पण्डित ज्ञानचंदजी जैन विदिशा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' भोपाल, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित प्रकाशदादा मैनपुरी, ब्र. कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित मुकेशजी तन्मय विदिशा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित आलोकजी जैन कारंजा, पण्डित संजीव जैन दिल्ली, पण्डित शान्तिलालजी महिदपुर, पण्डित अरुणजी जैन अलवर, पण्डित अरहंतजी झांझरी उज्जैन, पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा, पण्डित कमलजी जैन पिड़ावा, पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित पद्मचंदजी जैन सर्राफ आगरा आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त स्थानीय व भिण्ड संभाग में ग्रुप शिविर के विद्वान भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के प्रात:कालीन स्वाध्याय से हुआ। श्री बाहुबली जिनमन्दिर में रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया।मंगल कलश की स्थापना का सौभाग्य पण्डित कैलाशचंदजी जैन परिवार के साथ-साथ अमेरिका निवासी श्रीमती ज्योत्स्नाबेन तथा आगरा, मेरठ, जबलपुर और सहारनपुर मुमुक्षु मण्डल की आत्मार्थी बहिनों को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् आचार्य कुन्दकुन्द प्रवचन मण्डप के बाह्य परिसर में स्थापित गुरुदेवश्री के आदमकद स्टेच्यू के अनावरणपूर्वक प्रवचन मण्डप का उद्घाटन हुआ। स्टेच्यू का अनावरण श्री निरंजनभाई सुरेन्द्रनगर मण्डल व ब्र. हेमन्तभाई गाँधी सोनगढ द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर एवं मुख्य अतिथि श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर थे। इनके अतिरिक्त सभी समागत विद्वानों के साथ-साथ श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री महाचंदजी जैन भीलवाड़ा, श्री ए.के.जैन रुड़की, श्री भरतभाई कारंजा भी मंचासीन थे। मंचासीन अतिथियों का स्वागत डॉ. राजकुमार जैन, श्री मुकेश जैन, श्री स्वप्निल जैन, श्री अनिल जैन-पावना परिवार द्वारा तिलक लगाकर व अंगवस्त्र पहिनाकर किया गया। इस मंगल महोत्सव के उद्घाटन का लाभ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बिजौलिया (राज.) को प्राप्त हुआ।

तत्पश्चात् पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा पण्डित कैलाशचंदजी जैन के जीवन पर प्रकाश डालते हुए स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। दोपहर में पण्डित रजनीभाई, ब्र. हेमन्तभाई गाँधी द्वारा स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ एवं 'कारण-कार्य व्यवस्था' पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस गोष्ठी में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज एवं श्रीमती बीना जैन देहरादून ने अपने विचार व्यक्त किये।

दिनांक 10 जून को ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रात:कालीन प्रौढकक्षा का लाभ मिला। प्रात: पूजन-विधान, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् प्रवचनमण्डप में स्थापित आचार्य कुन्दकुन्द, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के स्टूच्यू का अनावरण किया गया। साथ ही आचार्य अमृतचंद्र, नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती, समन्तभद्राचार्य, जिनसेनाचार्य एवं पण्डित बनारसीदासजी, टोडरमलजी, दौलतरामजी के स्टेच्यू का भी अनावरण किया गया। इसके साथ ही सोनगढ के चित्र, समाधिमरण, सुकुमाल मुनिराज, गजकुमार मुनिराज, यशोधर मुनिराज के चित्रों का भी अनावरण किया गया।

समारोह के अन्तर्गत इस सभा की अध्यक्षता पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अच्युतानन्दजी मिश्र एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में पद्मभूषण डॉ. गोपालदासजी नीरज, श्री हितेन ए. सेठ मुम्बई, श्री अक्षय दोशी मुम्बई व श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट के समस्त संस्थागत ट्रस्टी मंचासीन थे।

कार्यक्रम में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने भी पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय की ओर से पण्डित कैलाशचंदजी का शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र भेंट कर स्वागत किया।

दोपहरकालीन सभा में ब्र. हेमचंदजी एवं पण्डित अभयजी देवलाली के स्वाध्याय का लाभ मिला। तत्पश्चात् 'आत्मानुभूति की प्रक्रिया' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की।

सायंकाल पण्डित कैलाशचंदजी के जीवन पर आधारित पण्डित कैलाशचंद जैन गौरव गाथा नामक वृत्तचित्र सीडी का ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली और ट्रस्टी श्री अजितजी जैन बड़ोदरा द्वारा विमोचनपूर्वक प्रदर्शन किया गया।

अन्तिम दिन के.के.पी.पी.एस. उज्जैन और जैन युवा फैडरेशन भिण्ड द्वारा आयोजित बाल संस्कार ग्रुप शिविर का समापन, भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के धार्मिक परीक्षा परिणाम और पारितोषिक वितरण आदि कार्यक्रम संपन्न हुये। भिण्ड ग्रुप शिविर में सहयोग करने वाले सभी विद्वानों का स्वागत किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम के सूत्रधार श्री पवनजी जैन द्वारा समस्त विद्वानों, विशिष्ट अतिथियों एवं आत्मार्थी बन्धुओं के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

इसप्रकार पण्डित कैलाशचंदजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हुआ मंगल समर्पण समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ।